शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वैदिक युगीन विदथ : एक समीक्षा

डॉ० सुबोध कुमार मिश्र
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

वैदिक युगीन विदथ : एक समीक्षा

– डॉ० सुबोध कुमार मिश्र

जहाँ तक लोकतांत्रिक संस्थाओं की बात है, वैदिक साहित्य में सभा, समिति, विदथ, गण और परिषद् जैसी लोक संस्थाओं का उल्लेख मिलता है। वैदिक कालीन संस्था 'विदथ' आर्यों की प्राचीनतम जन सभा थी। प्रस्तुत शोध आलेख वैदिक युगीन संस्था 'विदथ' के स्वरूप का विवेचन प्रस्तुत करता है।

विषय संकेतः– **विदथ, भारतीय लोक संस्थाएँ, प्राचीन भारतोय राजव्यवस्था, वैदिक काल, लोकतांत्रिक संस्थाएँ, सभा, समिति, गण, परिषद**

किसी भी उदीयमान समाज के सुव्यवस्थित संचालन हतु लोक संस्थाओं का होना एक स्वाभाविक एवं महत्त्वपूर्ण आवश्यकता होती है। विश्व की समस्त सभ्यताओं के आरम्भिक चरणों में ऐसी लोक संस्थाओं का अभ्युदय दृष्टिगोचर होता है। सुमेर की जन-सभाएँ, यूनान की ब्यूल तथा अगोरा और भारत की वैदिक कालीन सभा, समिति व विदथ ऐसी ही प्रारम्भिक लोक संस्थाए थीं। प्राय: प्राचीन भारतीय राज शासन पर प्रकाश डालने वाले कुछ पाश्चात्य इतिहासकारों[1] की धारणा थी कि प्राचीन भारत में लोकमत तथा लोक संस्थाओं का कोई महत्त्व नहीं था तथा किसी भी प्रकार की कोई लोक संस्था विद्यमान नहीं थी। परिणामत: भारत में प्रारम्भ से ही निरंकुश राजतन्त्र अस्तित्व में था। इन पाश्चात्य इतिहासकारों के मतों का खण्डन के.पी. जायसवाल[2], यू.एन.घोषाल[3], ए.एस.अल्टेकर[4] तथा रामशरण शर्मा[5] प्रभृति विद्वानों ने अपने अथक शोध कार्यों के द्वारा किया। इतना ही नहीं इन विद्वानों ने वैदिक वाङ्गमय में वर्णित अनेकों प्रकार की लोकतांत्रिक संस्थाओं की ओर भी इतिहास जगत् का ध्यानाकर्षण किया है।

प्राचीन भारतीय जनसमितियों के अध्ययन का प्रारम्भ भारतीय इतिहासकारों द्वारा वस्तुत: भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के पाश्चात्य मूल्यांकनकर्ताओं विशेषकर जेम्स मिल के इसी आरोप के सन्दर्भ में हुआ कि प्राचीन भारत में लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था का अभाव था। यहाँ के निवासी न तो वैयक्तिक स्वतंत्रता का महत्त्व समझते थे, और न ही इन्हें लोकतांत्रिक व्यवस्था का ज्ञान था। यहाँ तक कि लोकतांत्रिक स्वशासन की राष्ट्रीय क्षमता भी उनमें कभी नहीं रही। ऐतिहासिक अन्वेषणों के परिणामस्वरूप जब बुद्धकालीन गणतंत्रों का पता चला, पाणिनि और सिकन्दर के समय के पश्चिमोत्तर भारत के अनेक गणतंत्र जब प्रकाश में आये और उनके परवर्ती इतिहास की भी जानकारी हुई, तब जाकर समूचा इतिहास जगत् यह मानने को बाध्य हुआ कि लोकतांत्रिकता न केवल हमारे राजनीतिक जीवन की विशेषता थी, अपितु भारतीय जीवन के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक पक्ष भी उससे अनुप्राणित थे।

वैदिक कालीन प्रमुख लोक संस्थाओं में 'सभा', 'समिति', 'विदथ', 'गण' आर 'परिषद्' आदि को परिगणित किया जा सकता है। सम्भवत: इन लोक संस्थाओं में 'विदथ' सर्वाधिक प्राचीन संस्था थी। इसका अस्तित्व राज्यहीन जनजातीय समुदायों में ही आ गया होगा। इसके स्वरूप के विषय में अद्यतन अनेक मत-मतान्तर हैं, तथापि यह वैदिक कालीन सभा समिति की अपेक्षा कहीं अधिक प्राचीन जनसभा थी। यद्यपि कि सभा और समिति जैसी संस्थाओं के स्वरूप पर प्रकाश डालने के लिए अपेक्षाकृत काफी कुछ लिखा गया है, परन्तु 'विदथ' का स्वरूप तथा अन्य अधिकांश पक्ष आज भी अल्पज्ञात एवं अन्धकारपूर्ण हैं। फिर भी 'विदथ' सभा तथा समिति से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण थी। विदथ का महत्त्व इसी से आँका जा सकता है कि जहाँ ऋग्वेद में सभा का उल्लेख 8 बार, और समिति का 9 बार हुआ है, वहीं हम विदथ का उल्लेख 122 बार पाते हैं। इसी प्रकार अथर्ववेद में सभा और समिति का उल्लेख क्रमश: 17 और 13 बार आया है जबकि 'विदथ' का उल्लेख 22 बार हुआ है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वैदिक युगीन विदथ : एक समीक्षा

डॉ० सुबोध कुमार मिश्र
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

यहाँ यह भी महत्त्वपूर्ण है कि विदथ शब्द का उल्लेख परवर्ती संहिताओं, ब्राह्मणग्रन्थों एवं आरण्यकों में भी अनेकत्र मिलता है। वैदिक साहित्य जहाँ विदथ के उल्लेखों से भरा पड़ा है सभा और समिति का जिक्र कहीं-कहीं ही हुआ है। फिर जिस प्रकार ऋग्वेद में सभा और समिति का उल्लेख कम और अथर्ववेद में अपेक्षाकृत अधिक है, उसी प्रकार विदथ का उल्लेख ऋग्वेद में अधिक और अथर्ववेद में उसकी तुलना में कम है। इससे यह स्पष्ट होता है कि संस्था के रूप में विदथ प्राक् ऋग्वैदिक काल में अधिक महत्त्वपूर्ण था तथा सभा और समिति को उत्तर वैदिक काल में प्रमुखता प्राप्त हुई।[6]

'विदथ' शब्द के तात्पर्य और व्याख्या पर भिन्न-भिन्न इतिहासकारों के अपने अलग-अलग मत हैं।[7] वस्तुतः विदथ शब्द की निष्पत्ति 'विद्' धातु से हुई है जिसका अर्थ क्रमशः जानना, धारण करना अथवा होना है।[8] राथ के अनुसार विदथ शब्द का प्रारम्भिक तात्पर्य 'व्यवस्था' से था जो बाद में चलकर 'व्यवस्था स्थापित करने वाली संस्था' के रूप में परिवर्तित हो गया।[9] राथ के अनुसार अंतिम रूप से विदथ एक ऐसी संस्था के रूप में विकसित हुआ जो धार्मिक अथवा सनिक अथवा लौकिक उद्देश्यों की पूर्ति करती थी।[10] लुड़विग के अनुसार विदथ एक प्रकार की विशिष्ट संस्था थी जो कि सामान्य जनों की संस्था न होकर 'मघवाजनों' एवं ब्राह्मणों की संस्था थी। जिमर[11] के मतानुसार विदथ समिति की तुलना में एक छोटी संस्था थी। ओल्डेनबर्ग[12] ने विदथ को 'यज्ञ' का पर्यायवाची स्वीकार किया है। ध्यातव्य है कि पूर्व में ओल्डेनबर्ग ने विदथ का अर्थ 'धर्मविधि' बताया था। गोल्डेनर[13] महोदय ने विदथ का प्रारम्भिक अर्थ 'ज्ञान' माना है। वे विदथ को विद् धातु से व्युत्पन्न स्वीकार करते हैं तथा इसका विकसित अथ 'यज्ञ' मानते हैं। इसी प्रकार ब्लूमफील्ड[14] ने विदथ को 'सदनम्' अथवा 'गृह' से समीकृत किया है।

भारतीय विचारकों एवं इतिहासकारों ने भी अपने-अपने स्तर पर विदथ के स्वरूप को स्पष्ट करने का सराहनीय प्रयास किया है। डॉ. काशी प्रसाद जायसवाल ने[15] अथर्ववेद का सन्दर्भ दते हुए विदथ के सन्दर्भ में कहा है कि यह पूर्ववैदिक आर्यों के जीवन के धार्मिक पक्ष को व्यवस्थित करने वाली संस्था थी।[16] साथ ही उनका मानना है कि 'विदथ' 'सभा' एवं 'समिति' से प्राचीनतर संस्था थी और विदथ ही वैदिक आर्यों की वह मूलसभा थी, जिससे कालान्तर में 'सभा', 'समिति', 'गण', 'परिषद्' तथा 'सेना' आदि पृथक होकर विकसित हुए[17] क्योंकि विदथ का सम्बन्ध सामाजिक, सैनिक एवं धार्मिक गतिविधियों के साथ समान रूप से दिखाई देता है। डॉ. अनन्त सदाशिव अल्टेकर ने भी 'विदथ' शब्द को विद् धातु से आविर्भूत माना है तथा इसे मूलतः धार्मिक अथवा यज्ञ से सम्बन्धित संस्था स्वीकार किया है। इनका मानना है कि यह एक बहुत बड़ी सभा थी जिसमें सम्भवतः सम्पूर्ण जन का प्रतिनिधित्व होता था।[18] इसी क्रम में प्रो. यू.एन. घोषाल निष्कर्ष रूप में कहते हैं कि विदथ से सम्बन्धित मत-मतान्तरों को दृष्टि में रखते हुए इसके स्वरूप का निर्धारण असम्भव है।[19]

प्रसिद्ध भारतीय विद्वान एवं दार्शनिक पाण्डुरंग वामन काणे ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'धर्मशास्त्र का इतिहास' के तृतीय खण्ड में हमारा ध्यान ऋग्वेद के एक मंत्र की ओर आकर्षित किया है, जहाँ सोम से एक ऐसे पुत्र के लिये प्रार्थना की गयी है जो 'सादन्ध', 'विदध्य' और 'सभेय' हो[20]। इससे इतना परिलक्षित होता है कि विदथ, सभा की ही भाँति एक जनसंस्था थी, बावजूद इसके काणे महोदय भी विदथ के वास्तविक स्वरूप को उद्घाटित करने में असमर्थता व्यक्त करते हैं।

जहाँ तक विदथ के स्वरूप, संगठन एवं कार्यों का सवाल है, रामशरण शर्मा ने इस दिशा में अधिक वैज्ञानिक ढंग से सराहनीय विचार प्रस्तुत किया है।[21] प्रो. शर्मा के अनुसार विदथ में महिलाओं की भागीदारी सभा तथा समितियों की तुलना में अधिक थी। सुविदित है कि सभा के सन्दर्भ में स्त्रियों का उल्लेख केवल एक स्थान पर आया है[22] और वहाँ भी इस बात को लेकर पर्याप्त विवाद है कि 'सभावती' विशेषण का प्रयोग स्त्री (योषा) के लिए हुआ है अथवा वाणी (वाक्) के लिए। समिति के साथ तो स्त्रियों का सम्बन्ध बिल्कुल भी दृष्टिगोचर नहीं होता है। जबकि इसके विपरित ऋग्वेद, अथर्ववेद दोनों में मिलाकर कम से कम 7 ऐसे स्थल हैं जहाँ न केवल विदथ में स्त्रियों के उपस्थित होने का प्रसंग आया है, प्रत्युत उन्हें इसमें होने वाले वाद-विवाद में बढ़-चढ़ कर हिस्सेदारी करते हुए भी दर्शाया गया है। उल्लेखनीय है कि ऋग्वेद के 10वें मण्डल में वर्णित है

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वैदिक युगीन विदथ : एक समीक्षा

डॉ० सुबोध कुमार मिश्र
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

कि नववध को पतिगृह जाते समय यह आशीर्वाद दिया जाता था कि वह विदथ को अपने वश में कर सके। यथा-

''गृहान् गच्छ गृहपत्नीयथासो वसिनी त्वं विदथमा वदासिद:।''

(ऋग्वेद:-10.85.26)

पुन: ऋग्वेद में उल्लिखित है कि विदथ में ये अपेक्षा की जाती थी कि पत्नी, पति के साथ विदथ में वाद-विवाद में हिस्सा ले और बोले भी। यथा-

''एना पत्यातन्वं सं सृजस्वाधा जिव्रि विदथमा वदाथ:।''

(ऋग्वेद:- 10. 85. 27)

उपरोक्त दृष्टान्तों के आधार पर ऐसा प्रतीत होता है कि स्त्री तथा पुरुष सम्मिलित रूप से विदथ को संगठित करते थे तथा उसमें समान रूप से सम्मिलित होकर अपने-अपने विचारों को अन्यान्य लोगों के समक्ष प्रस्तुत करते थे।

प्रो. शर्मा ने विदथ की तुलना 'आइरोक्वोई'[23] से की है, जो सामान्यत: एक समान गोत्र के सभी बालिग पुरुष और महिला सदस्यों की ऐसी जनतांत्रिक सभा थी, जिसमें सभी का समान महत्त्व था।[24] इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विदथ का स्वरूप उन यूनानी, रोमन और जर्मनी आदि देशों की जनसभाओं से बिल्कुल भिन्न था, जिनमें स्त्रियों को कोई स्थान नहीं दिया जाता था, जिनकी जानकारी हमें अभी तक प्राप्त है।

ऐसा प्रतीत होता है कि विदथ का स्वरूप पूर्णत: लोकतांत्रिक था, अत: इसमें विचार-विमर्श किये जाने का भी उल्लेख प्राप्त होता है। जनमानस इसमें ऊँची-ऊँची बातें करने की लालसा रखता था।[25] गृहस्वामी मृत्यु से निवारण के लिये प्रार्थना करता था, ताकि जीवित रहकर वह विदथ में बोल सके।[26] ऐसा प्रतीत होता है कि विदथ के विचार-विमर्श में बड़े-बुजुर्गों को ज्यादा महत्त्व दिया जाता था। यह एक ऐसी विशेषता है जो समस्त आदिम सभ्यताओं में समान रूप से पायी जाती है। पुनश्च विचार-विमर्श का विषय क्या होता था, इस दिशा में ओल्डेनबग[27] ने अपनी राय प्रस्तुत करते हुए बताया है कि विदथ का अर्थ वितरण से है। वैदिक साहित्य में भी इस अर्थ की सार्थकता दिखाने वाले कुछ तथ्य उपलब्ध होते हैं। ऋग्वेद के एक अवतरण में विदथ में बुलाये गये लोगों को उस अवसर पर उपस्थित रहने को कहा गया है, जब प्रतिदिन जो कुछ भी उत्पादित किया जाता है, उसका सवितर द्वारा वितरण किया जा रहा हो।[28] एक अन्य स्थल पर अग्नि का वर्णन विदथ में उत्पादनों के उदार वितरक के रूप में करते हुए कहा गया है कि-

''त्वं अग्ने राजा वरुणे...त्वं अर्यमा सत्पतिर्यस्य संभुजं त्वं अंशो विदथे देव भाजयु:।'' (ऋग्वेद-द्वितीयमण्डल)

द्रष्टव्य है कि उपज का वितरण प्रत्येक आदिम जनसमूहों का एक महत्त्वपूर्ण कार्य होता था। वर्तमान समय तक भारत तथा अफ्रीका की कुछ आदिम जनजातियों में यह प्रथा मौजूद है कि समूह के एक व्यक्ति द्वारा किये गये समस्त आखटों पर केवल उसी व्यक्ति का नहीं, अपितु समूह के हर सदस्य का अधिकार होता है और पूरा समूह समान रूप से उसका भक्षण करता है।[29] अत: हम नि:संकोच ऐसा अनुमान लगा सकते हैं कि विदथ में एकत्र हुए लोग खाद्य पदार्थों को मिल बाँट कर खाते थे।

ऋग्वेद में विदथ के जितने भी उल्लेख प्राप्त होते हं, उनमें सबसे बड़ी संख्या (लगभग 23 उल्लेख) ऐसे उल्लेखों की है जिनसे इस संस्था के सामरिक स्वरूप की होने का संकेत मिलता है। विदथ में शक्तिशाली वीरों के पराक्रम की चर्चा होती थी साथ ही साथ अग्नि की विजयदायिनी शक्ति का वर्णन भी किया जाता था।[30] विदथ में उपस्थित होने वाले वीरों (विदथेषुवीरा:) का उल्लेख ऋग्वेद के अनेक मंत्रों में मिलता है। इसी प्रकार ऋग्वेद के प्राचीनतम् 6वें और 7वें मण्डल में अनेकत्र यह कामना की गयी है कि हम वीर पुत्रों से सम्पन्न होकर विदथ में जोर से बोलें। कदाचित् युद्ध में अतिशय उपयागी होने के कारण ही बहुसंख्यक पुत्रों की कामना भी की जाती थी। उल्लेखनीय है कि ऋग्वेद के विवाह सूक्त में नवविवाहिता वधू को 10 पुत्रों की माता बनने का आशीर्वाद दिया गया है।[31]

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वैदिक युगीन विदथ : एक समीक्षा

डॉ० सुबोध कुमार मिश्र
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

सम्भवत: आर्यों के इतिहास की प्रारम्भिक अवस्था में जनजातीय युद्धों का संचालन विदथ द्वारा ही होता था। ध्यातव्य है कि आदिम जनजातियाँ प्राय: ही पड़ोसी जनजातियों से संघर्षरत रहा करती थीं। पशुधन के लिये संघर्ष के संकेत ऋग्वेद में यत्र-तत्र बिखरे पड़े हैं। सम्भवत: युद्ध धर्नाजन का भी एक महत्त्वपूर्ण साधन रहा हो।

अब प्रश्न यह उठता है कि युद्ध की स्थिति में विदथ का नेतृत्व कौन करता था। इस सम्बन्ध में ऋग्वेद के अनेक प्रसंगों के द्वारा इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है। इन्द्र को विदथ की शक्ति कहा गया है।[32] पूषन को विदथ का वीर कहा गया है और अग्नि की इच्छा का वर्णन 'विदथ' में उपस्थित अधिराट की इच्छा के रूप में किया गया है।[33] स्पष्टत: ये दैवी नेता मानवीय नेताओं के ही प्रतिबिम्ब थे। अब नेता की नियुक्ति कैसे होती थी यह सुनिश्चित करना अपेक्षाकृत कठिन है तथापि दो उल्लेखों से प्रकट होता है कि अग्नि, जिसे अक्सर पुरोहित कहा गया है, विदथ में निर्वाचित हुआ था। ऋग्वेद के एक अवतरण के अनुसार अग्नि, जो सभापूरक होतृ पुरोहित है, यज्ञस्थल पर छोटे-बड़े सभी के द्वारा समान रूप से निर्वाचित होता है। यथा-

''मेघाकारं विदथस्य प्रसादनमग्नि होतारं परिभूतमं मतिम्।
तमिदर्भे हविष्यासमानभित्तभिन्महे वृणते नान्यं त्वत्।।''

(ऋग्वद-10/91.8)

ऋग्वेद में ही एक अन्य जगह उद्धृत है कि- समस्त लोगों की सहमति से ही अग्नि को पुरोहित चुना जाता था। यथा-

''त्वामिदत्र वृणते त्वायवो होतारमग्ने विदथेषु वेधस:।''

(ऋग्वेद-10/91.9)

यह असम्भव नहीं है कि ऋग्वेदीय समाज की प्रारम्भिक स्थिति में निर्वाचित प्रधान युद्ध और शान्ति दोनों ही परिस्थितियों में मिस्र के फराओं के समान नेतृत्व का कार्य करता रहा हो, तथा प्रधान योद्धा एवं पुरोहित दोनों की भूमिका का निर्वाह करता रहा हो। किन्तु क्रमश: पुरोहित और युद्ध नेता के कार्यक्षेत्र विभक्त हुए होंगे, क्योंकि दोनों कार्यों के लिये पृथक-पृथक योग्यताएँ अपेक्षित थीं।

विदथ के सैनिक स्वरूप का निर्देशन करने वाले उल्लेखों के बाद सबसे बड़ी संख्या इस शब्द के ऐसे उल्लेखों की है जिनसे इसका धार्मिक स्वरूप उजागर होता है। वेदों के भाष्यकार सायण को इसका धार्मिक पक्ष इतना प्रबल और व्यापक प्रतीत हुआ कि उन्होंने विदथ शब्द का अर्थ ही यज्ञ मान लिया। परन्तु सायण के आधार पर वैदिक अवतरणों में विदथ के सभी उल्लेखों को यज्ञ का पर्याय मानना उतना ही अधिक अनुचित होगा जितना कि यास्क के आधार पर समिति को युद्ध का समानार्थी मानना।[34] विदथ को यज्ञ का पर्याय मानना ऋग्वेद की कुछेक ऋचाओं के सन्दर्भ में भले ही ठीक हो, किन्तु ऐसी ऋचाओं में जिनमें विदथ और यज्ञ शब्दों का प्रयोग दो अलग-अलग अर्थों में और स्वतंत्र रूप में हुआ है, वह तर्कसंगत नहीं लगता। उदाहरण स्वरूप, ऋग्वेद का एक श्लोक ह-

प्रद्यवा यत्तै: पृथिवी ऋतावृधा
महि स्तुषे विदथेषु प्रचेतसा!

इस श्लोक में हमारे मनीषियों द्वारा इन्द्र और वरुण का आह्वान कर कहा गया है कि-हे देवो, विदथों में हमारा यज्ञ सुन्दर और सफल हों। विदथ और यज्ञ का अन्तर स्पष्ट करने वाली इस तरह की अनेक अन्य ऋचाएँ भी वैदिक वाङगमय में अनेकत्र मिलती हैं।

इसी प्रकार के अन्य अनेक श्लोकों के माध्यम से विदथ के अन्यन्य धार्मिक पक्ष उजागर होते हैं, परन्तु कोई भी ऐसा प्रामाणिक साक्ष्य उपलब्ध नहीं हो पाता जिसके आधार पर हम निश्चयात्मक रूप से विदथ को एक धार्मिक संस्था के रूप में स्थापित कर सकें।

इस प्रकार उपलब्ध उपरोक्त सन्दर्भों का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि विदथ भारतीय आर्यों की प्राचीनतम जनसभा थी, जिसमें स्त्री-पुरुष, दोनों ही सम्मिलित रूप में आर्थिक, सामाजिक, सामरिक एवं धार्मिक सभी प्रकार के कार्यों का सम्पादन करते थे। यह संस्था आदिम समाज की जरूरतों को पूरी करती थी। इस

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वैदिक युगीन विदथ : एक समीक्षा

डॉ० सुबोध कुमार मिश्र
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

समाज में श्रम विभाजन का, या महिलाओं पर पुरुषों के आधिपत्य का चलन नहीं था, और यह सम्भवत: मिलजुल कर उपज का उपभोग करती थीं। ऐसा प्रतीत होता है कि विदथ प्रणाली की आधारशिला सहकारिता की भावना थी। स्त्री-पुरुष का भेद बरते बिना इसमें सम्मिलित लोग साथ-साथ लड़ते, साथ-साथ गाते, साथ-साथ प्रार्थना करते, साथ-साथ खेलते और साथ-साथ विचार-विमर्श किया करते थे। विदथ किस हद तक शासन क्षेत्र का काम करती थी, यह कहना कठिन है। इस सन्दर्भ के आन्तरिक साक्ष्य अपने आपमें इतने छिटपुट तथा बिखरे हैं कि इनके सहारे इस समस्या का समाधान असम्भव न सही पर अत्यन्त श्रमसाध्य व दुष्कर है। कालान्तर में विदथ का अस्तित्व जाता रहा तथा उसके स्थान पर सभा और समिति जैसी संस्थाएँ समाज में प्रतिष्ठित हुईं।

विदथ के सन्दर्भ में हमं किसी भी निश्चित मत पर पहुँचने के लिये आगे और अधिक अनुसन्धान, श्रम तथा अन्वेषण की आवश्यकता है। जिसके द्वारा इसके स्वरूप तथा कार्यप्रणाली का ठीक-ठीक ज्ञान हो सके।

सन्दर्भ-

1- विन्सेन्ट स्मिथ (अर्ली हिस्ट्री ऑफ इण्डिया) तथा जेम्स मिल, कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, सन् 1904
2- के.पी. जायसवाल, हिन्दू पॉलिटी, दि बंगलोर, प्रिन्टिंग एण्ड पब्लिशिंग कम्पनी, बंगलोर, सन् 1924 ई.
3- यू.एन. घोषाल, हिस्ट्री आफ हिन्दू पब्लिक लाइफ, भाग-1
4- ए.एस. अल्टेकर, प्राचीन भारतीय शासन पद्धति, विश्वविद्यालय, प्रकाशन, चौक, वाराणसी, सन् 2005
5- रामशरण शर्मा, प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ, राज कमल प्रकाशन, प्रा0 लि0, नई दिल्ली-2001
6- रामशरण शर्मा, प्राचीन भारत में राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ, पृ.-91
7- यू.एन. घोषाल, हिस्ट्री ऑफ हिन्दू पब्लिक लाइफ, भाग-1 पृ.-28, आर घाषाल, कलकत्ता
8- ''विद् ज्ञाने, विद् चारणो, विद्लृलाभे, विद् सत्तायम्'' (शब्दकल्पद्रुम, IV, सम्पादक राधाकान्त देव, न्यू पब्लिशर, 1998, पृ.-286)
9- मैकडोलन एण्ड कीथ, वैदिक इन्डेक्स, भाग-2, मोती लाल बनारसीदास, नई दिल्ली, सन् 1912, पृ.-296-299
10- ऋग्वेद-1.60.3/2.4.8, वैदिक इन्डेक्स भाग-2, पृ.-296
11- वैदिक इन्डेक्स, भाग-2 पृ.-296-299
12- मैक्समूलर, सेक्रेड बुक ऑफ द इस्ट, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, पृ.-46
13- वही, पृ.-147
14- जर्नल आफ ओरिएण्टल सोसाइटी, पृ.-12-19
15- के.पी. जायसवाल, हिन्दू पॉलिटी, दि बंगलोर, प्रिन्टिंग एण्ड पब्लिशिंग कम्पनी, बंगलोर, सन् 1924, पृ.-20
16- श्रीराम शर्मा, अथर्ववेद-7.384, संस्कृत संस्थान, बरेली।
17- 'दिवो नपाता विदथस्य धिमी: धीरा:'। ऋग्वेद-3.38.5, सम्पादक, श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली।
18- डॉ. ए.एस. अल्टेकर, स्टेट एण्ड गवर्नमेण्ट इन एनशिएन्ट इण्डिया, मोती लाल बनारसीदास, नई दिल्ली, सन् 1912, पृ. -141
19- यू. एन. घोषाल, स्टडी इन इण्डियन हिस्ट्री एण्ड कल्चर, ओरिएन्ट लांगमैन, सन् 1965, पृ.-351-52
20- पॉडुरंगन वामन काणे, धर्मशास्त्र का इतिहास, भाग-3, उ0 प्र0 हिन्दी संस्थान, सन् 2003, पृ.-92
21- रामशरण शर्मा, प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचार एवं संस्थाएँ, राज कमल प्रकाशन, नई दिल्ली, सन् 2001, पृ.-63-80
22- ऋग्वेद-1.167.3, सम्पादक, श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली।
23- न्यूयार्क में निवास करने वाली 5 अथवा 6 आदिम जातियों का संघ।
24- रामशरण शर्मा, द ओरिजिन ऑफ द फेमिली, प्राईवेट प्रापर्टी एण्ड द स्टेट, पृ.-126
25- अथर्ववेद-13.3.24, सम्पादक, श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली।
26- अथर्ववेद-12.2.30, सम्पादक, श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली।
27- सेक्रेड बुक ऑफ द इस्ट, भाग-17, पृ.-26
28- ''यदद्यदेव: सविता सुवाति स्यामस्य रत्निनो विभागे''।
-ऋग्वेद-7.40.1, सम्पादक, श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.:
DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly
Vol-5, Issue-1
15 Jan, 2014

वैदिक युगीन विदथ : एक समीक्षा

डॉ० सुबोध कुमार मिश्र
प्रवक्ता, प्राचीन इतिहास पुरातत्त्व एवं संस्कृति विभाग
महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर

www.shodh.net
Web Portal of Humanity & Social Science Research

29- अफ्रीका महाद्वीप के भिन्न-भिन्न भू-भागों में पायी जाने वाली विभिन्न जनजातियाँ यथा-मसाई, पिग्मी, कोरा, बुशमैन तथा ओकाबांगो के डेल्टाई क्षेत्र में रहन वाली अनेक जंगली जातियाँ आज भी इसी पद्धति के सहारे अपना जीवन यापन कर रही हैं। इन जनजाति समूहों का यदि कोई अकेला सदस्य, भले ही अपने दम पर कोई शिकार करता हो, परन्तु उस शिकार को पूरा समूह मिल बाँट कर ही खाता है। (स्रोत- National Geography Chanal पर प्रसारित कार्यक्रम Wildest-Africa से)

30- ऋग्वेद-6.8.6, सम्पादक, श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली।

31- ऋग्वेद-10/85, सम्पादक, श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली।

32- ''पतिं दक्षस्य विदथस्य''। ऋ.-1.56.2, सम्पादक, श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली।

33- ऋग्वेद-7.38.8, 7.36.8, सम्पादक, श्रीराम शर्मा, संस्कृत संस्थान, बरेली।

34- बन्द्योपाध्याय, डेवलपमेण्ट ऑफ हिन्दू पॉलिटी एण्ड पालिटिकल थिअरीज, सी0ओ0 बुक एजेन्सी, सन् 1938, पृ.-118

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN